SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

ध्रुपद मेला बनारस: पंडित लालमणि मिश्र जी की देन

ANUJ PRATAP SINGH[1], DR. SANTOSH KUMAR PATHAK[2]

1Research Scholar, Department of Performing Arts, Banasthali Vidyapeeth, Rajasthan
2Associate Professor, Department of Performing Arts, Banasthali Vidyapeeth, Rajasthan

सार

कला के किसी भी रूप को उत्थान प्राप्ति हेतु प्रायः उस कला को सीचने वाले कृषक रूपी कलाकार, उस कला का आस्वादन लेने वाले श्रोता व उस कला को आश्रित करने वाले आश्रयदाता की आवश्यकता होती है। कला के संवर्धन में कुछ ऐसे महान कलाकारों एवं कला प्रेमियों का योगदान, कला एवं सांगीतिक आयोजनों को अमर कर जाता है, जिन्हें उस कला के श्रोताओं, कलाकारों, व कला समीक्षकों के द्वारा सदैव स्मरण किया जाता है। विलुप्त होती संगीत की प्राचीन शैली ध्रुपद के पुनरुत्थान हेतु ऐसे ही महान कलाकार, शास्त्रकार, कला के संरक्षक, रचनाकार व संगीत गुरु पंडित लालमणि मिश्र जी के द्वारा ध्रुपद मेले की स्थापना सन् 1974 में हुई, जोकि तब से निरंतर हर वर्ष बनारस में आयोजित होता आ रहा है। पंडित लालमणि मिश्र के सांगीतिक व उनके जीवन के कुछ अन्य पहलुओं से लेकर ध्रुपद शैली के प्रति उनके अपूर्व योगदान "ध्रुपद मेले" के विषय में यह शोध पत्र प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द *– ध्रुपद, ध्रुपद मेला, पं. लालमणि मिश्र, बनारस*

ध्रुपद शैली का परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत की अतिप्राचीनतम शैली ध्रुपद है। ध्रुपद शैली में गंभीरता व सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय है। यह शैली पूर्णतः शास्त्रबद्ध है तथा इसकी शास्त्रीयता में लेशमात्र भी परिवर्तन नहीं होता है। ध्रुपद का शाब्दिक अर्थ होता है– ध्रुव+पद अर्थात् वह सुंदर पद, जो कि ध्रुव तारे के समान चमकता हुआ अपनी मर्यादा में सुसज्जित है व अटल-अचल है। नाट्यशास्त्र के समान ही ध्रुव शब्द भी प्राचीन है। संगीत के आधर ग्रंथ "नाट्यशास्त्र के अनुसार वर्ण, अलंकार, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ ध्रुव रूप में परस्पर संबद्ध रहें, उन गीतों को ध्रुवा कहा गया है। जिन पदों में उक्त नियम का निर्वाह हो रहा हो, उन्हें ध्रुवपद अथवा ध्रुपद कहा जाता है।" (ध्रुपद, 2022).

ध्रुपद गायन शैली की उत्पत्ति प्रबंध से मानी जाती है। "स्वामी प्रज्ञानानन्द - के अनुसार "प्रबंध" मुख्य रूप से मंदिरों का संगीत था और प्रबन्ध के आधार पर ही ध्रुपद की रचना होने के कारण ध्रुपद भी आरंभ में मंदिरों में ही गाए जाते थे।" (यमन, 2015, जनबरी 1, पृ. 237).

"गीर्वाणमध्यदेशीयभाषासाहित्यराजित्।
द्विचतुर्वाक्यसंपन्नं नरनारी कथाश्रयम्।।
श्रृंगाररसभावाद्यं रागालाप पदात्मकम्।
पदांतानुप्रासयुक्तं पदानयुगकं चवा।।
प्रतिवादं यत्र वद्धमेवं पादचतुष्टयम्।
उद्ग्राहध्रु वकाभोगांतरं ध्रुवपदं स्मृतम्।।" (वसंत, 2010, अप्रैल, पृ. 232).

अर्थात् – ध्रुपद गायन के चार भाग होते हैं, प्रथम स्थाई, द्वितीय अन्तरा, तृतीय संचारी, एवं चतुर्थ व अंतिम भाग आभोग होता है। ध्रुपद अधिकांश चौताल, सूलफ़ाक्ता, झंपा, तीव्रा, ब्रह्मताल , रुद्र ताल इत्यादि तालों में गाए जाते हैं। ध्रुपद की संगति पखावज वादन के साथ होती है।

"ध्रुपद गंभीर प्रकृति का गीत है। इसे गाने में कंठ और फेफड़े पर बल पड़ता है। इसलिए लोग इसे मर्दाना गीत कहते हैं।" (श्रीवास्तव, 2011, पृ. 195).

हमारे भारतीय संगीत को अनेक महान विद्वानों ने अपनी कड़ी तपस्या से पोषित किया है व संवर्धित किया है एवं अपना पूरा जीवन ही संगीत को समर्पित कर दिया है। शोधार्थी द्वारा ऐसे अनेक महान विद्वानों में से एक महत्वपूर्ण विभूति पं. लालमणि मिश्र जी के योगदान के विषय में कार्य किया जा रहा है, जो कि महान शास्त्रकार, संगीतज्ञ, गुरु थे। आप एक उत्तम वीणा वादक थे, साथ ही अनेक वाद्य यंत्रों के वादन में आपको महारथ हासिल थी।

पं. लालमणि मिश्र जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

पं. जी का जन्म 11 अगस्त 1924 को कानपुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। संगीत के प्रति रुझान आपको अपनी माता जी के कारण हुआ। 1930 में कानपुर में हुए दंगों के कारण आपके पिता परिवार सहित कलकत्ता आ गाए, तब आपकी उम्र लगभग 5 वर्ष की थी। कलकत्ता में आपकी माता को संगीत की शिक्षा प्रदान करने कथा वाचक पं. गोवर्धन लाल आपके घर आया करते थे। बालक लालमणि के संगीत के प्रति रुझान एवं क्षमता देख उन्होंने लालमणि को ध्रुपद और भजन की शिक्षा प्रदान करना शुरू की। पंडित जी को हारमोनियम वादन की शिक्षा विश्वनाथ प्रसाद गुप्त जी से प्राप्त हुई, तत्पश्चात् पं. कालिका प्रसाद से ध्रुपद धमार की विधिवत शिक्षा, रामपुर सेनीय घरने के उस्ताद वज़ीर खां के शिष्य मेहदी हुसैन खां से ख़्याल की शिक्षा तथा मल्लिक घराना (बिहार) के पंडित शुकदेव राय से सितार वादन की शिक्षा प्राप्त की। 1944 में उस्ताद अब्दुल अज़ीज़ खां से प्रेरित होकर आपने विचित्र वीणा वादन सीखना प्रारंभ किया।

आपने तबले की शिक्षा स्वामी प्रमोदानन्द जी से प्राप्त की। आप शंकर भट्ट व मुंशी भृगुनाथ लाल की ध्रुपद धमार परंपरा से भी ताल्लुक रखते थे तथा उस्ताद आमिर आली खां के संरक्षण में आपने अनेक वाद्ययंत्रों के वादन की बारीकियाँ सीखीं। 1940 में अपने पिता के देहांत के बाद आप अपने जन्मस्थल कानपुर वापस आए तथा वहाँ आपने बच्चों को संगीत की शिक्षा देने हेतु विभिन्न बाल संगीत विद्यालयों की स्थापना की तथा गांधी संगीत महाविद्यालय की स्थापना की। "भरत मुनि द्वारा विधान की गयी बाईस श्रुतिओं को मानव इतिहास में पहली बार डॉ. मिश्र द्वारा निर्मित वाद्य यंत्र श्रुति-वीणा पर एक साथ सुनना सम्भव हुआ।"(लालमणि मिश्र , 2024).

सन् 1951 में आप कानपुर के गांधी संगीत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य बने। उस ही वर्ष आप नृत्य गुरु पं. उदय शंकर के नृत्य दल से संगीत निर्देशक के रूप में जुड़े व दल के साथ विभिन्न कार्यक्रमों में दल के मंचन के लिए देश-विदेश की यात्रा सन् 1954 तक की। "1958 में पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर के आग्रह पर वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत संकाय में वाद्य विभाग के रीडर पद पर सुशोभित हुए और यहीं डीन और विभागाध्यक्ष भी हुए।" (लालमणि मिश्र , 2018). 17 जुलाई सन् 1979 को आपने अपना देह त्याग दिया।

पंडित लालमणि मिश्र जी शिक्षक के रूप में

- पं. जी अपने शिष्यों को वाद्ययंत्रों को मिलाने का घंटों अभ्यास कराते थे। उनका मानना था की वाद्यों को बजाने से पहले उन्हें मिलाना आना चाहिए।
- विद्यार्थियों को आरंभ में बुनियादी रागों जैसे विलबाल, भैरव, कल्याण इत्यादि की शिक्षा देते थे। उनकी धारणा थी कि सीधे चलन वाले रागों का पहले अभ्यास करने से कठिन रागों को सीखना सरल हो जाता है।
- उनके अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी समझ अलग है तथा इसी कारण अलग अलग विद्यार्थियों को अलग अलग तरीके से सिखाते थे।

  1969 में USA में University of Pennsylvania की तरफ़ से शिक्षण के लिए आमंत्रित किया गया, वहाँ आपने भारतीय संगीत की शिक्षा बखूबी दी। आपके शिक्षण कौशल के चलते जब 1969 में आप BHU वापस लौटे तब आपके कुछ अमरीकी विद्यार्थियों द्वारा संगीत की शिक्षा आपसे प्राप्त करने की प्रबल इच्छा प्रकट की गई, जिसके चलते आपने कई नए डॉक्टोरल प्रोग्राम BHU में शुरू किए।

शास्त्रकार के रूप में

आपके द्वारा चार पुस्तकों का लेखन कार्य किया जा चुका है। आपका शोध कार्य डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के निर्देशन में 'भारतीय संगीत वाद्यों का प्रतीकात्मक एवं स्वरूपात्मक अध्ययन', जिस पर आपको PhD की उपाधि प्राप्त हुई। पुस्तक के रूप में यह 1973 में 'भारतीय संगीत वाद्य' के नाम से प्रकाशित हुई। आपकी अन्य पुस्तकों में तबला विज्ञान, तंत्री नाद, संगीत सरित हैं। (Boral, Prof. N.C., n.d.).

कलाकार के रूप में

पं. लालमणि मिश्र जी एक कुशल वीणा वादक, विद्वान शिक्षक, उच्च स्तर के शास्त्रकार व रचनाकार थे। विचित्रवीणा के अलावा सितार, सरोद, तबला, जलतरंग इत्यादि वाद्य आप निपुणता से बजा सकते थे, साथ ही आप गायन की ध्रुपद, धमार, ख़्याल, टप्पा, ठुमरी इत्यादि के भी विद्वान थे। अपने सांगीतिक कौशल के चलते आपको उदयशंकर जी ने अपने नृत्य दल में बतौर संगीत निर्देशक आमंत्रित किया।

प्रायोगिक संगीत के क्षेत्र में पं. जी का योगदान

पं. उदय शंकर पं. लालमणि जी की सांगीतिक क्रियात्मकता से अत्यंत प्रभावित थे व दोनों के बीच घनिष्ट मित्रता थी व मिश्र जी ने 1950 में पं. उदय शंकर जी के नृत्य दल में निर्देशक का पद भार संभाला व कई नाट्यों में संगीत दिया। ये नाट्य निम्न प्रकार हैं –

प्रोमिला अर्जुन–यह नृत्य नाटिका सन् 1940 में तैयार की गई, इसमें प्रोमिला का अर्जुन के प्रति आकर्षण तथा दोनों के बीच युद्ध की घटना इत्यादि के नाट्य में पं. जी ने संगीत निर्देशित किया। 1951 में पं. जी ने बुद्ध–बैले में कुशल संगीत निर्देशन किया जिसे पहले अमेरिका फिर भारत में खूब ख्याति मिली, इसी बैले को सन् 1956 में छायाचित्र, तथा बाद में ओपेरा के रूप में प्रस्तुत किया गया। पं. जी ने उदय शंकर जी के विशेष आग्रह पर 'रामायण' महाकाव्य पर आधारित 'रामलीला' के नाट्य में सन् 1954 में संगीत निर्देशित किया।

मिश्र जी द्वारा नव निर्मित राग

जिनमें राग मधुकली, बालेश्वरी, आनंद भैरवी, सामेश्वरी, जोग तोड़ी, श्याम बिहाग, मधु भैरव हैं। इनमें व अन्य रागों में आपके द्वारा विभिन्न तालों में गतें एवं छोटे-बड़े ख़्यालों की भी रचना की गई। आपने 50 से अधिक वाद्यवृंद की रचना की जोकि देश-विदेश में बहुत पसंद की गई। इसके अतिरिक्त मिश्र जी ने 'मीरा ऑपेरा' में भी संगीत की रचना एवं निर्देशन का कार्य किया। 'मीरा ऑपेरा' आपकी अद्भुत एवं सफल कृति थी। डॉ. अरुण कुमार सेन के अनुसार 'वृंदवादन' की नई तकनीकों पर उनका प्रगाढ़ विश्वास था।

स्वरचित नवीन शैली मिश्र वाणी

पं. जी ने विलम्बित, मध्य एवं द्रुत गतों की रचना के साथ नवीन गत शैली 'कूट' अथवा 'मिश्रवाणी' गत का भी निर्माण किया। इसकी रचना आपने तीन ताल, आड़ाचारताल, झूमरा एवं झपताल में की है। 'भारतीय संगीत वाद्य' पुस्तक में आपने इस शैली की गतें विभिन्न रागों एवं तालों में रचित की हैं। (कौर, गुरप्रीत, 2004, पृ. 47, 117-126).

मिश्र जी की शिष्य परंपरा में

आनंद शंकर–सितार, ओमप्रकाश चौरसिया–संतूर, डॉ. गोपाल शंकर मिश्र–सितार, विचित्र वीणा (पं. जी के पुत्र व शिष्य), रागिनी त्रिवेदी–सितार, (पुत्री व शिष्या), स्व. छेदीलाल श्रीवास्तव–बाँसुरी, सविता देवी–सितार, नन्दकिशोर मिश्र–सितार, बाला सुंदरी–सितार, पुष्पा बसु–सितार, डॉ. सुधाकर भट्ट–सितार, डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती–सितार, डॉ. रामू प्रसाद शास्त्री–वायलिन, स्व. डॉ. के. सी. गंगराडे–सितार, डॉ. प्रह्लाद मिश्र–बाँसुरी, डॉ. सियाबिहारी शरण–जलतरंग, डॉ. लक्ष्मी गणेश तिवारी–गायन, डॉ. रमाकांत द्विवेदी–गायन, डॉ. निर्मला सक्सेना–गायन इत्यादि। मिश्र जी ने कुछ शिष्यों को ध्रुपद–धमार गायन शैली तथा अनेक पुरानी अलंभ बंदिशें भी सिखाई।

मिश्र जी के विदेशी शिष्यों में नैनसी फुसफील्ड, जैसिक डुमुए जियो, स्टीफेन स्लावेक, जोए जिम आर्नाल्ड, डॉ. हेनरी पावर्स, पैट्रिक मूटल आदि हैं।

ध्रुपद मेला बनारस

लालमणि मिश्र की प्रारंभिक शिक्षा ध्रुपद धमार शैली में ही हुई थी। आपका वादन ध्रुपद-धमार शैली से प्रभावित था। अतः ध्रुपद शैली से आपके विशेष लगाव के चलते इस शैली के पुनरुत्थान एवं जनसामान्य में इसकी लोकप्रियता को लेकर आप अत्यंत चिंतित रहते थे। कानपुर के प्रयागनारायण शिवाला ट्रस्ट के द्वारा हर वर्ष आयोजित होने वाले 'रामायण' मेले से मिश्र जी अधिक प्रभावित थे, तभी से उनके अंदर ध्रुपद–धमार शैली एवं पखावज वादन के संवर्धन हेतु ऐसे ही सांगीतिक मेले के आयोजन की सोच उत्पन्न हुई, जिसके लिए आपने महंत श्री वीर भद्र मिश्र, डॉ. के. सी. गंगराडे, महंत अमरनाथ मिश्र, आशुतोष भट्टाचार्य, डॉ. राजेश्वर आचार्य आदि के साथ मिलकर एक विशेष समिति स्थापित की। डॉ. लालमणि मिश्र ने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से संगीत नाटक अकादमी से 10,000 हज़ार रुपए अनुदान ध्रुपद मेले हेतु प्राप्त

किये। तथा डॉ. राजेश्वर आचार्य द्वारा पूर्व स्थापित भाव प्रभा पद्य संस्थान ने भी ध्रुपद मेले को साकार करने में विशेष भूमिका निभाई। अतः लालमणि जी के व उनकी बनाई हुई समिति के अथक व सुसंगत प्रयासों के फलस्वरूप 1974 में शिवरात्रि के अवसर पर राम चारितमान के रचयता गोस्वामी तुलसीदास जी का अखाड़ा भदैनी (तुलसीघाट) पर प्रथम ध्रुपद मेला सार्वजनिक संगीत सम्मेलन के रूप में आयोजित किया गया जिसमें संसाधनों के अभाव के चलते लालमणि मिश्र जी ने लक्ष्मण चौबे–मथुरा, निमाई चंद्र बोराल–शांति निकेतन, के. एल. ताम्हड़कर-जबलपुर, विदुर मल्लिक–दरभंगा, भरत व्यास–बड़ौदा, सियाराम तिवारी–पटना, पखावजियों में आरा से पन्नालाल, रमाकांत पाठक–लखनऊ, स्वामी पागलदास–अयोध्या। इनके अतिरिक्त डॉ. सुमति मुटाटकार, डॉ. प्रेम लता शर्मा, डॉ. इंदूरमा श्रीवास्तव, श्री बालाजी चतुर्वेदी, और जयपुर से लक्ष्मण भट्ट इत्यादि को आपने विशेष अनुरोध पर निःशुल्क प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया जिसे इन महान विभूतियों ने सहृदय स्वीकार भी किया। अकादमी से मिले अनुदान की राशि क्यूंकी 10,000 रुपए मात्र थी, इसीलिए लालमणि जी ने कलाकारों को उनका यात्रा व्यय प्रदान किया। ध्रुपद मेले के इस प्रथम आयोजन में 3,000 श्रोता कलाकारों की प्रस्तुति के साक्षी बने।

ध्रुपद मेले पर विद्वजनों की प्रतिक्रिया

डॉ. सुरेशव्रत राय ने ध्रुपद मेले की सफलता के संदर्भ में लिखा है कि "व्यवसायी कलाकारों को अपना कार्यक्रम निःशुल्क प्रस्तुत करने के लिए तैयार करना अति कठिन कार्य है। यह डॉ. मिश्र के सम्मोहक व्यक्तित्व का ही परिणाम है; वास्तव में यह एक अविश्वसनीय कार्य था जिसमें पं. रविशंकर से लेकर राज्यपाल तक ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सहयोग दिया। आज तक ध्रुपद मेले की परंपरा चल रही है। अन्यत्र भी ध्रुपद सम्मेलन होने लगे हैं। लोगों के मन में एक बार फिर ध्रुपद बसता जा रहा है।" डॉ. सुरेशव्रत जी ने जब लालमणि जी का साक्षात्कार लिया, तब लालमणि जी इस मेले के विषय में कहते हैं कि, "ध्रुपद की लोकप्रियता क्षमता के संबंध में सार्वजनिक भ्रम निवारण इस मेले की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।" डॉ. आशुतोष भट्टाचार्य लिखते हैं कि, "यह लालमणि जी की ही देन है कि आज तक ध्रुपद मेला बनारस में चल रहा है। यह एक अच्छा काम बनारस के लिए कर गए।" डॉ. सुरेशव्रत राय लिखते हैं कि, "मृतप्रायः समझी जाने वाली ध्रुपद शैली को अपनी विलक्षण प्रतिभा, संगठन क्षमता द्वारा पं. मिश्रा ने काशी में ध्रुपद मेला आयोजित करके जैसी लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा दिलाई, उस पर सहज विश्वास नहीं होता।" पं. महादेव प्रसाद मिश्र लिखते हैं कि, "यह पंडित जी की ही कृपा है कि आज ध्रुपद मेला हर जगह हो रहा है। ध्रुपद मेले की नींव पं. जी ने ही बनारस में डाली थी, जो आज देश-विदेश में पनप रही है।" वास्तव में यह लालमणि मिश्र जी का ध्रुपद शैली के प्रति एक नवीन प्रयोग ध्रुपद मेले के रूप में साकार हुआ है जो कि ध्रुपद शैली के पुनरुत्थान में सफल साबित हुआ है। इसके अतिरिक्त पं. मिश्र ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी के संगीत संकाय में भी संगीत के बहुत से कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संयोजन किया। पं. मिश्र ने निःस्वार्थ भाव से ध्रुपद मेला को अमर करने हेतु अनेक सफल प्रयत्न किए। पं. मिश्र जीवन के अंतिम क्षण तक ध्रुपद मेले के लिए चिंतित रहे। काशी नरेश ने स्वयं अपने साक्षात्कार में इसका समर्थन किया है। उन्होंने बताया कि, "जब मैं मिश्र जी को अस्पताल में देखने गया तो उन्होनें धीमे-धीमे शब्दों में बड़ी मुश्किल से समझाकर एक ही चिंता व्यक्त की कि 'हमारे बाद ध्रुपद मेले का क्या होगा?' हमारा आश्वासन लेकर ही वे निश्चिंत हो सके।" ध्रुपद मेले के प्रथम आयोजन में काशी नरेश महाराजा विभूति नारायण सिंह द्वारा कोई भी राशि प्राप्त नहीं हो सकी थी, परंतु पंडित मिश्र के व्यक्तित्व के प्रभाव और मेले के प्रथम आयोजन की सफलता के पश्चात् आगामी मेले के लिए उनकी भी सहयोगिता अनुदान के रूप में प्राप्त होने लगी।

तत्कालीन काशी नरेश ने मिश्रजी के संगीत के प्रति निस्वार्थ भाव पर अपने विचार इस प्रकार कहे हैं, "He used me, my place not for his personal interest but for the service of music as he never took undue advantage from me. He was also able to create my interest in music. He was a person of clear dealing. He was honest in money matters. He used to give account of money immediately after the function is over. He never thought of his own advantage." (कौर, गुरप्रीत, 2004, पृ. 151-155).

वर्तमान समय में ध्रुपद मेला देश के विख्यात कार्यक्रमों में से एक है। इसका आयोजन प्रति वर्ष बनारस के तुलसी घाट पर किया जाता है, काशी नरेश द्वारा हर वर्ष ध्रुपद मेले के लिए अनुदान दिया जाता है। अन्य आवश्यक सहायता तुलसी मंदिर द्वारा होती है, वर्तमान में इस परंपरा को संकट मोचन मंदिर के महंत श्री विशंभरनाथ मिश्र निभा रहे हैं।

निष्कर्ष

पं. लालमणि मिश्र एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। एक कुशल कलाकार, शास्त्रकार, संगीत निर्देशक के साथ-साथ आप कला को उच्चस्तर तक पहुँचाने के दृष्टिकोण को लिए हुए थे। लुप्त हो रही ध्रुपद शैली को संगीत सुधीजनों व आम जनता तक पुनः पहुँचाने व इस शैली के प्रति रुझान को जनमानस में पुनः जागृत करने का कार्य आपने समर्पण के साथ किया। ध्रुपद मेले के आयोजन के पीछे पं. जी का मुख्य उद्देश्य ध्रुपद शैली के गायन–वादन कलाकारों एवं पखावज वादकों को प्रोत्साहन व उनकी कला को देश-विदेश में ख्याति प्राप्त कराना था; जिसके फलस्वरूप ध्रुपद मेला आज भी निरंतर बनारस में प्रति वर्ष शिव रात्री से लगभग 2 से 3 दिवस पूर्व प्रारंभ हो कर शिव रात्री पर समाप्त होता है। इस मेले की सफलता से प्रभावित होकर विभिन्न आयोजकों ने ध्रुपद के समारोहों को आयोजित करना प्रारंभ किया तथा इन्हीं सभी कार्यक्रमों के फलस्वरूप ध्रुपद शैली पुनः श्रोताओं के बीच स्थापित होती जा रही है। पं. जी के सार्थक प्रयत्नों के फलस्वरूप ध्रुपद मेले के माध्यम से कलाकारों को अवसर प्राप्त हुए हैं व हो रहे हैं जिनसे उनकी कला को स्वीकरण प्राप्त हुआ। ध्रुपद मेले जैसे कार्यक्रमों में आए कलाकारों को सुनकर ही नए विद्यार्थियों के मन में कला के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है जिसके फलस्वरूप वे कला को सीखने में निरंतर प्रयत्नरत रहते हैं, अतः ध्रुपद मेले जैसे कार्यक्रमों की वजह से ही कला संवर्धित व पोषित होती है।

संदर्भ

Boral, Prof. N.C. (n.d.). Versatile genius: Dr. Laalmani Mishra. omenad. https://www.omenad.net/articles/lmisra_vgenius.html

कौर, गुरप्रीत. (2004). भारतीय संगीत के अनमोल मणि डॉ. लालमणि मिश्र. नई दिल्ली: कनिष्क पुब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृ. 47, 117-126, 151-155

ध्रुपद. (2022, अगस्त 1). विकिपिडिया. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A4%A6

यमन, अशोक कुमार. (2015, जनबरी 1). संगीत रत्नावली. चंडीगढ़: अभिषेक पुब्लिकेशन. पृ. 237

लालमणि मिश्र. (2018, अगस्त 11). भारत कोश. https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AE%E0%A4%A3%E0%A4%BF_%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0

लालमणि मिश्र. (2024, मई 21). विकिपिडिया . https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AE%E0%A4%A3%E0%A4%BF_%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0

वसंत. (2010, अप्रैल). संगीत विशारद. हाथरस: संगीत कार्यालय, (उ. प्र.). पृ. 232

श्रीवास्तव, प्रो.हरिश्चंद्र. (2011). राग परिचय. इलाहबाद: संगीत सदन प्रकाशन 134 साउथ मलाका, इलाहबाद. पृ. 195